B.A.II (History) paper – IX
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

रूस-जापान युद्ध का महत्व :-

1904-05 का रूस-जापान का युद्ध विश्व के निर्णायक युद्धों में से एक है। जिसने पूर्व एवं पश्चिमी दोनों जगत को उद्वेलित किया। इसलिए प्रोफेसर K.S. Latourette ने लिखा है " The lost decisive of the events of the present century. the Russo-japani warr- heralded ephen-eran and durable changes in the of both occident and orient." यह युद्ध कोरिया और मंचूरिया के प्रश्न पर हुआ था इसकी परिणति जापान की रूस पर विजय और पोर्टसमाउथ की संधि (5 sep 1905) द्वारा युद्ध की समाप्ति में हुई थी।

20वीं शती के प्रथम दशक सर्वाधिक महत्वपूर्ण इस युद्ध था इस घटना ने ना सिर्फ संलग्न देशों को बल्कि सुदूर पूर्व की परवर्ती और तात्कालिक राजनीतिक एवं इतिहास को प्रभावित किया बल्कि विश्व के किसी एक घटना ने शायद ही इतना युगान्तकारी प्रभाव छोड़ा हो और इस संदर्भ में **निकोलस मैंसर्ग** ने ठीक ही लिखा है कि " This warr had been one of those event that had changed first the out look and then history of a Continent"

जापान

यह युद्ध जापान के लिए जीवन और मौत था यदि वह हार जाता तो सिमित नीतियों और महत्वाकांक्षा पर पानी फिर जाते लेकिन जीतने के बाद इसकी गणना संसार के महान एवं शक्तिशाली राष्ट्रों के रूप में होने लगी। जापान ने सामरिक दक्षता और उत्साहरिकत का परिचय देकर विश्व की अग्रणी देशों की श्रेणी में स्थान पाई और **रूस की हार से** जापानी साम्राज्यवाद मार्ग प्रशस्त हुआ। जो भविष्य में ये लोग 'yellow peril' (आतंक) के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इस जीत ने 1894-95 में चीन-जापान युद्ध के बाद हुए (1905) सिमोनोसेकी की संधि द्वारा जापान द्वारा रूस पर थोपे गए अपमान को धो दिया और उसे चीन के प्रदेशों में प्रवेश का पर्याप्त अवसर मिला।

इस प्रकार 1894-95 के चीन-जपान युद्ध और 1904-05 के रूस जपान युद्ध के मिश्रित परिणाम स्वरूप जपानी साम्राज्यवाद के प्रभाव में जपान एक विश्व शक्ति बनकर उभरा।

इस जीत से जो लाभ जपान को मिले उसकी कल्पना खुद जपान ने भी नहीं की थी। हार के कारण पूर्वी एशिया में रूस का प्रसारण रुक गया, मंचूरिया पर उसका नाममात्र अधिकार रहा। अपनी नवअर्जित शक्ति के आधार पर जपान ने ब्रिटेन से 1902 में किए आंग्ल-जपान संधि के शर्तों में संशोधन की मांग की ताकि जपान की स्थिति और मजबूत हो सके। कोरिया पर से रूस का प्रभाव खत्म हो गया और अब जपान अपनी आवश्यकता और इच्छानुसार कार्य करने में स्वतंत्र हो गया और 1910 में इस परिस्थिति का लाभ उठाकर उसने कोरिया पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार इस जीत ने कोरिया के जपानी साम्राज्यवाद के स्वामित्व करने के लिए जपान का रास्ता सुगम बना दिया। मंचूरिया - जपान को भी बढ़ती जनसंख्या के आवास के लिए मंचूरिया पर पर्याप्त स्थान मिले और जपान मंचूरिया की खनिज सम्पदा का उपयोग अपनी औद्योगिक विस्तार के लिए कर सकता था। अतः इस युद्ध के परिणाम स्वरूप जपान के आर्थिक विकास को भी बल मिला।

रूस

इस युद्ध में हार ने रूस की कमजोरी और खोखलेपन को स्पष्ट कर दिया। वहाँ आन्तरिक कलह होने लगे। इसने रूस की राजनीति क्रांति पर की आधारशिला रखी। एक ओर इसने रूसी साम्राज्यवाद पर कठोर आघात किया तो दूसरी ओर ज़ार की तानाशाह ने प्रकृति के खिलाफ उसने जन और असंतोष को और बढ़ाया। इस युद्ध से रूस की आम जनता को काफी क्षति उठानी पड़ी थी और सरकार पर दबाव डालने के लिए वहाँ के श्रमिकों ने हड़ताल भी किया। 9 Jan 1905 को हजारों की संख्या में किसान और मजदूरों ने एक विशाल जुलूस का प्रदर्शन भी किया। इनकी मांगों को सुनने की बजाय शासन की ओर से खून की होली खेली गई थी। यह बात हमेशा रूसी से इस दिन को 'Bloody Sunday' के नाम से याद किया जाता है।

Scanned with CamScanner